विश्वकर्मा पूजा

हे प्रकृति के नियोजक,
शिल्पकार, वस्तुकार।
नवाचार के प्रयोजक,
मेरी प्रबृति को स्थायित्व प्रदान करो।
ऐसा कुछ निर्माण करो,
जिसमे चित को स्थिर रहने का,
प्रावधान करो।।

दुनिया बड़ा देखा, हरा भरा देखा।
उजड़ा बिरान देखा,
कभी खुशी कभी गम,
के भाव मे बिधमान देखा।
आपके शिल्पकारी से,
अपने मन के भाव के,
अनुरुप जब आपका,
किर्तिमान देखा।
तो लगा सपनो को,
साकार रुप देने मे इसे,
बड़ा नही कोई निर्माण देखा।।

अंदर की खोज, बहुत गंभीर है प्रयोग।

फिर साथ होता है, संयोग और बियोग।
बाहर की माया, जो आपने बनाया,
साधना के मार्ग को, आसान देखा।
चित की प्रिती, मन का मित।
कितना सुन्दर है, ये प्रकृति स्वरुप।
हर एक गुण को, खुब दिखाया।
रच-रच कर, रचना बनाया।
चेतना को जगाने वाला,
सपना को साकार बनाया।
सफलता के लिए, होते है प्रयोग।
आपके ही आर्शिवाद से,
फल-फुल रहे है उद्योग।
इस बार प्रभु, कुछ नया का, बिचार मढ़ो।
दुसरे ग्रह पर जाने का,
उन्नत यंत्र का उदगार भरो।
अपने पुजा का बिस्तार करो,
और क्या मांगु आपसे,
बस मेरा प्रणाम,
बार-बार स्विकार करो।।
जय विश्वकर्मा।

लेखक एवं प्रेषकः- अमर नाथ साहु